3 – मीरा बाई

कवि परिचय

हिंदी के कृष्णभक्त कवियों में मीरा बाई का महत्वपूर्ण स्थान है। इनके जन्मकाल तथा जीवन–वृत्त के विषय में बहुत मतभेद है परन्तु मुख्यतः माना जाता है कि मीरा मेडता के राव रत्नसिंह की पुत्री थीं। इनका जन्म 1498ई0 में कुडकी गाँव में हुआ था। राणा साँगा के पुत्र भोजराज के साथ इनका विवाह 1516 ई0 में हुआ। कुछ वर्षों में ही कुँवर भोजराज मुगलों के साथ युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुए और मीरा विधवा हो गई। बचपन से ही मीरा कृष्ण के प्रति अनन्य प्रेम रखती थी। वे उन्हें ही अपना प्रिय और पति मानती थीं। लौकिक प्रेम में उनकी रूचि और निष्ठा नहीं थी। भगवान कृष्ण के प्रेम में दीवानी बनी मीरा ने लोक लाज छोडकर भक्ति का मार्ग अपनाया। साधु–सन्तों के साथ भक्ति भावना में लीन रहने और उनके साथ उठने–बैठने के कारण चित्तौड के राजपरिवार ने उनका विरोध किया। अंततः मीरा राजपरिवार को छोडकर द्वारका चली गई। वहीं कृष्ण की मूर्ति में विलीन हो गईं, ऐसी प्रसिद्धि है।

काव्य परिचय

मीरा ने विशेषतः पदों की रचना की थी। उनके पदों की अनेक टीकाएँ और संकलन बने है। उनके चार काव्य ग्रन्थ हैं– 1. नरसी जी का मायरा 2. गीत गोविंद की टीका 3. राग गोविंद , 4. राग सोरठ।

मीरा के पद राजस्थानी मिश्रित ब्रजभाषा में हैं। कोई चमत्कार दिखाने के लिए उन्होनें काव्य नहीं रचा। भगवान के प्रति अनन्य अनुराग उनके पदों में सहज रूप से व्यक्त हुआ है।

मीरा का काव्य माधुर्य भाव का जीवंत रूप है। वे कृष्ण को ही अपना पति मानकर उपासना करती थी। उनके लिए संसार में कृष्ण के अतिरिक्त दूसरा पुरूष अस्तित्व में ही नहीं था। कृष्ण के विरह में वे व्याकुल रहती थीं। यही व्याकुलता उनके पदों में व्यक्त हुई। श्रृंगार के विप्रंलभ पक्ष का चित्रण बहुत मार्मिक है।उनकी स्वानुभूति ने अभिव्यक्ति को अत्यधिक अनुपम बना दिया।

मीरा के पदों में प्रसाद और माधुर्य गुणों की प्रचुरता है। पदों में श्रुतिमधुर वर्णयोजना सीधी–सादी उक्तियाँ और सच्चा आत्म निवेदन उनके काव्य की ऐसी विशेषताएँ है जो मीरा को प्रथम कोटि के भक्त कवियों में निस्संदेह स्थान प्रदान करती है।

पाठ संकेत

प्रस्तुत संकलन में उद्धृत मीरा बाई के पदों में उनकी कृष्ण–भक्ति व्यक्त होती है। वे अपने को कृष्ण की दासी, प्रियतमा, भक्त एवं उपासिका के रूप में मानती है।संसार को नश्वर मानकर कृष्ण को परमात्मा के रूप में भजन से ही जीव का कल्याण हो सकता है। जब तक प्रिय से भेंट नहीं होती, जीव व्यथित रहता है चैन नहीं पडती। सद्गुरू की कृपा से भवसागर पार किया जा सकता है। वे कृष्ण को निर्गुण, सगुण, प्रिय ,जोगी आदि अनेक संबोधनों से पुकारती है। यहाँ कृष्ण प्रेम की अनन्यता प्रकट हुई है।

पदावली

(1) चरण कंवल अवणासी

भज मन ! चरण–कँवल अविनासी।
जेताई दीसै धरणि–गगन विच, तेता (इ) सब उठ जासी।।
इस देही का गरब न करणा, माटी में मिल जासी।
यो संसार चहर की बाजी, सांझ पड्यां उइ जासी।।
कहा भयो है भगवा पहर्याँ, घर तज भये सन्यासी।
जोगी होइ जुगति नहिं जांणि, उलटि जनम फिर आसी।।
अरज करूं अबला कर जोरे, स्याम! तुम्हारी दासी।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर! काटो जम की फाँसी।।

भज मन ! चरण कंवल अवणासी।
जेताई दीसां धरण गगन मां, तेताई उठ जासी।
तीरथ बरतां ग्यांण कथंता, कहा लियां करवत कासी।
यो देही रो गरब णा करणा माटी मां मिल जासी।
यो संसार चहर री बाजी, सांझ पड्यां उठ जासी।
कहां भयां थां भगवां पहर्यां, घर तज लयां सन्यासी।
जोगी होयां जुगत णां जाणा, उलट जणम फिर फांसी।
अरज करा अबला कर जोरया, स्याम तुम्हारी दासी।
रे प्रभु गिरधरनागर, काट्यां म्हारो गांसी॥

कठिन शब्दार्थः– कवँल–कमल। अविनासी–नष्ट न होने वाला, शाश्वत। जेताई– जितना भी। धरणि–धरती। गगन–आकाश। बिच– बीच में। तेता– उतना। उठ जासी– नष्ट हो जाएगा। देही–शरीर। गरब– गर्व, अहंकार। जासी–जाएगा। यो–यह। चहर की बाजी– चौसर नामक खेल की बाजी। उठ जासी– उठ जाएगी, खेल समाप्त हो जाएगा। भगवा–साधु–संन्यासियों द्वारा पहने जाने वाले गेरूए वस्त्र। तज– त्यागकर। जुगति– युक्ति, सही उपाय। उलटि– लौटकर, दोबारा अरज– अर्ज प्रार्थना। अबला– दुर्बल नारी। जम की फाँसी– यमराज का फन्दा, मृत्यु होना।

व्याख्याः– मीराबाई कहती है कि हे मन! तू कभी नष्ट न होने वाले भगवान् के चरण–कमलों का ध्यान किया कर । कारण यह है कि तुझे धरती और आकाश के बीच जो कुछ भी दिखाई देता है वह सब एक न एक दिन समाप्त हो जाएगा। वह सब नश्वर है। यह जो शरीर है, इस पर गर्व , घमण्ड करना ठीक नहीं है। यह तो एक दिन मिट्टी में मिल जाएगा। यह संसार चौसर के खेल की बाजी के समान है। बाजी शाम को खत्म होती ही है, उसी प्रकार संसार नष्ट हो जाने वाला है। चौसर का खेल शाम को बंद कर दिया जाता है, उसी प्रकार संसार एक दिन समाप्त हो जाता है। भगवान को प्राप्त करने के लिए गेरूआ वस्त्र धारण कर संन्यास लेने से कोई लाभ नहीं है। सन्यास लेने की आवश्यकता नहीं है। घर–द्वार छोडकर संन्यास लेने से क्या लाभ ? सन्यास लेकर, योगी होने से ही ईश्वर नहीं मिल जाता और जन्म मरण के चक्र से मुक्ति नहीं मिल जाती। घर द्वार छोडकर, संन्यासी होकर यदि ईश्वर को प्राप्त करने की युक्ति नहीं अपनायी तो फिर से इस संसार में जन्म लेना पडेगा। होना तो यह चाहिए कि ईश्वर की प्राप्ति हो तथा जन्म–मरण के कष्ट से छुटकारा मिल जाये।
मीराबाई कहती हैं कि हे श्याम! मैं तुम्हारी दासी हूँ। मैं हाथ जोडकर आपसे विनती करती हूँ कि आप मुझे यम की फाँसी, मुत्यु से मुक्ति दिलाओं। मेरा जन्म–मरण का चक्र समाप्त कर दो।

विशेषः–

1. मीरा ने अपने आराध्य से अपने उद्धार के लिए विनती की है।
2. मीरा इस संसार और शरीर को नश्वर तथा भगवान् को अविनाशी मानती है।
3. वे सही युक्ति अपनाये बिना संन्यास लेने को महत्व नहीं देतीं।वे उद्धार करने में समर्थ तो एक भगवान को ही मानती है।
4. वर्णन में भक्ति रस हैं पद शैली है। भाषा ब्रजभाषा मिश्रित राजस्थानी है।

(2) दूखण लागे नैन

दरस बिन दूखण लागे नैन।
जबसे तुम बिछुड़े प्रभु मोरे कबहुं न पायो चैन।
सबद सुणत मेरी छतियां कांपै मीठे लागै बैन।
बिरह व्यथा कांसू कहूं सजनी बह गई करवत ऐन।
कल न परत पल हरि मग जोवत भई छमासी रैन।
मीरा के प्रभु कब रे मिलोगे दुख मेटण सुख देन।

कठिन शब्दार्थः– दरस–दर्शन। चैन–आराम, शांति। सबद–शब्द। कांसू– किससे। करबत–काशी में मुक्ति पाने के उद्देश्य से आरी से शरीर चिरवाना। ऐन–भंडार। मग जोवत– रास्ते देखते देखते। छमासी रैण– छह महीने की रात। कबरे– कब। मेटण– मिटाने वाले। देण– देने वाले।

व्याख्याः– मीरा कहती हैं कि हे प्रभु, आपके दर्शन बहुत दिनों से नहीं हुए हैं, इसलिए आपके दर्शन की लालसा में मेरे नेत्र दुखने लगे हैं , उनमें दर्द होने लगा है। जब से आप मुझसे अलग हुए हैं, तब से मैंने कभी भी चैन नहीं पाया है,। मुझे शांति नहीं मिली है। कोई भी शब्द, आवाज होती है तो मुझे लगता है कि आप आ रहे हैं। आपके दर्शन पाने के लिए मेरा ह्रदय अधीर हो उठता है और मुख से मीठे वचन निकलने लगते हैं। पीडा में शब्द कडे होते ही नहीं हैं। मीरा कहती हैं कि सजनी! मुझे भगवान् के न मिलने से जैसी व्यथा होती है, उसे मैं किसे सुनाऊँ। सुनाने का लाभ भी नहीं है। विरह में मुझे इतना असह्य कष्ट होता है कि इससे तो काशी में जाकर करवत ले लूँ। मुझे थोडा भी चैन नहीं मिलता। पल–पल भगवान् की ही प्रतीक्षा किया करती हूँ। उनकी प्रतीक्षा करने से समय लम्बा प्रतीत होता है, रात छह महीने की प्रतीत होती है। मीरा कहती हैं कि हे मेरे प्रभू! आप आकर मुझसे कब मिलोगे। आपके आने से ही मेरा दुःख मिटेगा। आप सुख देने वाले हें और दुःख को दूर करने वाले हैं। आप आकर मेरा दुःख दूर कर दीजिए।

विशेषः–

1. यहां कृष्ण की भक्तिन मीरा की विरह–व्यथा का वर्णन हुआ है।
2. यहां भाषा में लाक्षणिकता, चित्रात्मकता की विशेषताऐं हैं तथा अनुप्रास, वीप्सा और अतिशयोक्ति अलंकार है।

(3) राम रतन धन पायो।

पायो जी म्हे तो राम रतन धन पायो।
वस्तु अमोलक दी म्हारे सतगुरु किरपा कर अपनायो।।
जनम जनमकी पूंजी पाई जगमें सभी खोवायो।
खरचै नहिं को चोर न लेवै दिन-दिन बढत सवायो।।
सतकी नाम खेवटिया सतगुरु भवसागर तर आयो।
मीराके प्रभु गिरधर नागर हरष हरष जस गायो।।२।।

कठिन शब्दार्थः– बसत– वस्तु। अमोलक– अमूल्य। किरपा–कृपा। खोवायो–खो दिया। खरचै नहिं– खर्च नहीं होता ,कम नहीं होता। बधत–बढता है। भवसागर– संसार रूपी समुद्र। तरि आयो– पार कर लिया। हरखि–हरखि– प्रसन्न हो होकर । जस–यश।

व्याख्याः–मीरा कहतीं हैं कि उन्हें गुरू कृपा से राम नाम रूपी अमूल्य धन प्राप्त हुआ है। उनके सद्गुरू ने कृपा करके उन्हें वह अद्भुत धन प्रदान किया है और अपने चरणों में स्थान दिया है। जन्म–जन्मान्तर के पुण्यों के फल से उन्हें यह मनुष्य शरीर प्राप्त हुआ है किन्तु अज्ञानवश यह संसार के सुखों में नष्ट हो रहा था। किन्तु गुरू ने मुझे राम रतन धन देकर निहाल कर दिया। मुझे जीवन का सही लक्ष्य–प्रभु के नाम का स्मरण बताया। यह ऐसा धन है जो खर्च करने पर भी घटता नहीं है अपितु यह दिन–प्रतिदिन सवाया (बढता हुआ) होता जाता हैं । इसे कोई चोर भी चुरा नहीं सकता। मीरा कहती हैं कि उन्होनें सत्य रूपी नौका और सद्गुरू रूपी केवट के द्वारा भवसागर पार कर लिया है। अपनी मुक्ति का मार्ग प्रशस्त कर लिया है। यह सब उनके प्रभु गिरधर नाम की कृपा से ही सम्भव हुआ है । अतः वह आंनदमग्न होकर प्रभु के यश का गान कर रही है।

1. प्रभु नाम स्मरण और गुरू कृपा के महत्व को दर्शाया गया है।
2. जन्म–जन्म, दिन–दिन , हरखि–हरखि– में पुनरूक्ति प्रकाश तथा सत की नाव खेवटिया में रूपक अलंकार है।

(4) लियो गोविंदो मोल।

माई री! मैं तो लियो गोविंदो मोल।
कोई कहै छानै, कोई कहै छुपकै, लियो री बजंता ढोल।
कोई कहै मुहंघो, कोई कहै सुहंगो, लियो री तराजू तोल।
कोई कहै कारो, कोई कहै गोरो, लियो री अमोलिक मोल।
या ही कूं सब जाणत है, लियो री आँखी खोल।
मीरा कूं प्रभु दरसण दीज्यो, पूरब जनम को कोल।

कठिन शब्दार्थः– गोविन्दो–श्रीकृष्ण। छानै–छिपकर। चौडे–सामने। बजंता ढोल– सबको जताकर। मुहघौं– महँगा। सुँहघो–सस्ता। तराजू तोल– विवके सहित। पूरब– पूर्व, पिछला। कोल– वचन देना।

व्याख्याः– मीरा कहती है कि उन्होंने अपने गोविन्द को मोल ले लिया है। कोई कहता है कि मैनें छिपकर अपने प्रिय को अपनाया है, कोई कहता है कि खुले में स्वीकार किया है। परन्तु मैंने तो ढोल बजाकर सबको जताकर यह सौदा किया है। चाहे कोई इसे महँगा सौदा बताए चाहे सस्ता बताए। मैंने तो तराजू पर तोल कर, अपने गोविन्द को अपनाया है। मुझे अपने निर्णय पर पूरा भरोसा हैं। मेरा प्रिय चाहे काला हो चाहे गोरा वह जैसा भी है, उसे मैंने आँखे खोलकर खूब सोच विचार कर अपनाया है। सारा जगत इस बात को जानता है कि मैने गोविन्द को पाने के लिए अमूल्य धन– अपना पवित्र अनुरागी ह्रदय समर्पित करके चुकाया है। मीरा कहती है– हे मेरे प्रभु! आप मुझे दर्शन देकर और अपनाकर कृतार्थ कीजिए क्योंकि आपने पूर्व जन्म में मुझे स्वीकार करने का वचन दे रखा है।

विशेषः–

1. गोविन्द को मोल लेना सब की वश की बात नही। मीरा जैसी समर्पिता और शरणागता ही उसका मोल चुका सकती है, संसारिक ठाट, बाट विराट मंदिर, उत्सवों की धूमधाम उस सर्वान्तरयामी को नहीं रिझा सकती।
2. बजंता ढोल , तराजू तोल, आँखे खोल जैसे मुहावरों के प्रयोग से प्रभावी अभिव्यक्ति
3. पूरब जनम को कोल का रहस्य वैसे तो मीरा ही जानती होगी किन्तु कुछ भावुक भक्तों ने पूर्व जन्म में मींरा को ललिता सखी माना है, जिसे कृष्ण ने प्रेमभाव दान दिया था।